Toppersnotes
Unleash the topper in you

1st - ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

भूगोल

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

पेपर - 2 || भाग - 3

भौगोलिक चिंतन, मानव, जनसँख्या, अधिवास एवं कृषि भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	भूगोल का अर्थ व परिभाषा	1
2	रोमन भूगोल वेताओ का योगदान	30
3	हम्बोल्ट	37
4	रिटर	45
5	रेटजेल	50
6	इमानुएल काण्ट	55
7	हार्टशोर्न	59
8	हटिग्टन	62
9	ब्लाश	65
10	जीन बूंश	68
11	हेटनर	70
12	कार्ल आस्कर सावर	72
13	द्वैतवाद	76
14	आधुनिक भारत में भूगोल का विकास	96
15	भूगोल में अभिनव प्रवृत्तियाँ	108
16	भूगोल में मात्रात्मक क्रान्ति	116
17	नियतिवाद	119
18	मानव भूगोल (अर्थ, प्रकृति, विषयक्षेत्र)	129
19	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ	142
20	मानव भूगोल के मूलभूत सिद्धान्त	150
21	प्रवास	155
22	मानव विकास व मानव प्रजातियां	173
23	मानव विकास संकल्पना	196

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	विश्व में जनसंख्या वृद्धि	200
25	जनसंख्या पिरामिड	228
26	अनुकूलतम् जनसंख्या	232
27	जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत	235
28	जनसंख्या वृद्धि सिद्धान्त	240
29	नगरों की उत्पत्ति एवं विकास	244
30	नगरीय प्रभाव क्षेत्र या अमलैण्ड	268
31	कोटि-आकार नियम	276
32	क्रिस्टालर का केन्द्र स्थल सिद्धान्त	280
33	विश्व के कृषि प्रदेश	287
34	वॉन थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति सिद्धांत	303

1 अध्याय भूगोल का अर्थ व परिभाषा

भूगोल का अर्थ व परिभाषा

भूगोल अर्थात् Geography यूनानी भाषा के दो शब्दों Geo व graphy से मिलकर बना है।

Geo – का अर्थ – पृथ्वी
Graphy का अर्थ – वर्णन करना
] – पृथ्वी का वर्णन करना

इस प्रकार भूगोल का अर्थ पृथ्वी का अध्ययन करना होता है

• भौगोलिक चिन्तन का इतिहास :-

[भूगोल की परिभाषा]

↳ भूगोल पृथ्वी का दर्पण है – हैंगेट
↳ आधुनिक भूगोल के संस्थापक – हम्बोल्ट
↳ भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी तल का अध्ययन है जो मानव का निवास गृह है – रिटर
↳ भूगोल भूतर के परिवर्तनशील स्वरूप यथार्थ, क्रमबद्ध, तर्कसंगत वर्णन एवं व्याख्या से संबंधित है – हार्टसन
↳ भूगोल पृथ्वी के उस भाग का अध्ययन करता है जो मानव का घर है – काण्ट
↳ भूगोल का अध्ययन में विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन उसकी सम्पूर्ण विशेषताओं के अनुसार किया जाता है – रिचथोफेन
↳ पार्थिव एकता के सिद्धान्त को प्रमुखता देने वाले – हम्बोल्ट रिटर, रेटजेल
↳ मानव भूगोल के तत्व पृथ्वी की एकता से संबंधित है।

केवल उसी के माध्यम से उसकी व्याख्या की जा सकती है - हेटनर

↳ 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही भूगोल में क्षेत्रीय समाकलन (एकीकरण) पर बल दिया जाने लगा।

↳ भूगोल स्थानिक समाकलन का क्रमबद्ध अध्ययन है - हेटनर

↳ हम्बोल्ट ने भूगोल को क्षेत्रीय (स्थानिक वितरण) का विज्ञान बताया और इसमें क्षेत्रीय अन्तर्सम्बंध और क्षेत्रीय अन्त निर्भरता पर सर्वाधिक बल दिया।

↳ अनुप्रयुक्त भूगोल के विकास में ब्रिटिश भूगोल वेत्ता डडले स्टाम्प का योगदान रहा इन्होंने ब्रिटेन में भूमि-सर्वेक्षण कराया और (1) अनुप्रयुक्त भूगोल (Applied Geography) (2) हमारा विकासशील विश्व (Our developing world) पुस्तक लिखी।

• अनुप्रयुक्त भूगोल में भारतीयों का योगदान :-

(1) S.P चटर्जी
(2) R.L सिंह
(3) मो. शफी

↳ कार्लसावर :- भूगोल क्षेत्रीय अध्ययन है।

↳ हेटनर :- क्षेत्रीय भिन्नता की संकल्पना।

↳ ब्रिटिश भूगोल वेत्ता समिति :-

"भूगोल वह विज्ञान है जो क्षेत्रों की भिन्नता और उसके सम्बंधों के सौन्दर्य में पृथ्वी के तल का वर्णन करता है"

Toppersnotes
Unleash the topper in you

हार्टशन :-

↳ भूगोल वह विज्ञान है जो भूतल के परिवर्तन स्वरूपों की व्याख्या मानवीय संसार के रूप में करता है।

↳ भूगोल पृथ्वी पर कहाँ की खोज करता है?

↳ भूगोल में तीन बिन्दुओं का अध्ययन किया जाता है।

(1) स्थान / क्षेत्र

(2) काल

(3) तत्व

भूगोल की प्रकृति :-

1. भूगोल भूतल का अध्ययन है।
2. भूगोल अन्तर्सम्बन्धो का अध्ययन है।
3. भूगोल क्षेत्रीय समाकलन का अध्ययन है।
4. भूगोल एक अन्तर्विषय विज्ञान है।
5. भूगोल एक अनुप्रयुक्त विज्ञान है।

डडले स्टाम्प [अनुप्रयुक्त भूगोल
नया विश्व

भूगोल की मौलिक सकल्पनाएँ :-

(1) भूतल की संकल्पना :-

↳ पृथ्वी की ऊपरी सतह का अध्ययन

(1) स्थल मण्डल (2) वायुमण्डल (3) जलमण्डल

(2) अवस्थिति / स्थिति की संकल्पना :-

(1) ज्यामितीय स्थिति – अक्षांश व देशान्तर

Unleash the topper in you

ध्रुवों का मान – 90°

(2) प्राकृतिक स्थिति

(3) सापेक्ष या भौगोलिक स्थिति

(3.) भू-दृश्य की संकल्पना :-

1. प्राकृतिक भूदृश्य
2. सांस्कृतिक भूदृश्य

↳ भूदृश्य को जर्मन शब्दावली में लैण्डशाफ्ट का प्रयोग किया जाता है।

↳ अमेरिकी भूगोल वेत्ता कार्ल० सावर ने भूदृश्य की विस्तृत विवेचना की Book - Morphology of Landscape (भूदृश्य की आकारिकी सावर ने भूदृश्य का प्रयोग दृष्टि में समुच्चय तथा प्रदेश दोनों अर्थों में किया है।

↳ कार्ल० सावर ने भूदृश्य को प्राकृतिक भूदृश्य व सांस्कृतिक भू-दृश्य दो वर्गों में विभक्त किया।

समुच्चय स्वरूप – सांस्कृतिक स्वरूप

(4) क्षेत्रीय विभेदशीलता (भिन्नता) की संकल्पना :-

हेटनर – 1905 में क्षेत्रीय भिन्नता को स्पष्ट किया, उन्होंने भूगोल को क्षेत्रीय विज्ञान बताया है।

(5.) मापनी की संकल्पना :-

(6) प्रदेश की संकल्पना या प्रादेशिक संकल्पना :-

↳ भौगोलिक अध्ययन की दो प्रधान विधियाँ है-

(1) क्रमबद्ध विधि

(2) प्रादेशिक विधि

↳ डी. इवीट्सली के अनुसार प्रदेश की 4 श्रेणीयाँ बनाई जा सकती है।

(1) एकल विषय प्रदेश
(2) बहुल विषय प्रदेश
(3) सम्पूर्ण विषय प्रदेश
(4) विशिष्ट प्रदेश या कम्पेज

↳ कई तत्वों की समानता पर आधारित प्रदेश को कम्पेज कहा जाता है।

7. कालिक परिवर्तन की संकल्पना :-

(1) अल्पकालिक परिवर्तन
(2) दीर्घकालिक परिवर्तन

8. स्थानिक अन्तःक्रिया की संकल्पना :-

↳ दो भौगोलिक क्षेत्रों के बीच होने वाली क्रिया-प्रतिक्रिया

Ex. दो क्षेत्रों के मध्य प्रवास / यातायात / लेनदेन / संचार

स्थानिक क्रिया के लिए आवश्यक तत्व - (1) सम्पर्क (2) संचार

भौतिक भूगोल की संकल्पनाएँ :-

(1) एकरूपतावाद की संकल्पनाएँ :-

↳ जेम्स हटन 1785 पृथ्वी पर कार्य नियम के समान ही वृद्धि नियम आज कार्य कर रहा है, जो करोड़ो वर्ष पूर्व कार्य करता था हालाकि उसकी गति कम या ज्यादा हो सकती है।

(2) प्राकृतिक भूदृश्य की संकल्पनाएँ :-

पृथ्वी तल पर प्रकृति या प्राकृतिक शक्तियों द्वारा निर्मित

भू-दृश्य जिसमें पर मानव क्रिया कलापों का प्रभाव नहीं पाया जाता है। यह मानव विहीन भू-भाग का द्योतक है।

(3) स्थलरूप की संकल्पना :-

प्रथम श्रेणी उपागम :- महाद्वीप, महासागर
द्वितीय श्रेणी उपागम :- प्रथम श्रेणी आकृतियों के ऊपर स्थित स्थलरूप — पर्वत, पठार, मैदान, घाटी, महासागरीय कटक, खाई

तृतीय श्रेणी उपागम :-

→ द्वितीय श्रेणी की भू आकृतियों पर आन्तरिक व बाह्य रूप में होता है — नदी घाटी, जल प्रपात, डेल्टा, गोखुर झील टर्न झील, हिमजगहर (सर्क) मोरेन, बालुका स्तूप, पेडीमेंट फिर्याट रिया, एस्चुरी, भृगु आदि।

• डेविस :-

कोई स्थल रूप भूगर्भिक संरचना, प्रक्रम, अवस्था का प्रतिफल होता है।

(4) भूगर्भिक संकल्पना :- चट्टानों की बनावट का अध्ययन।

(5) भू-आकृतिक प्रक्रम संकल्पना :-

↳ जिसमें आंतरिक या बाह्य भौतिक कारक द्वारा भूतल पर भू-आकृतियों (स्थलाकृतियों) का निर्माण तथा विकास होता है उसे भू-आकृतिक प्रक्रम कहते है। ये दो प्रकार के होते है।
(1) आंतरिक — भूकम्प, ज्वालामुखी, पटलविरूपण
(2) बाह्य — अपक्षय व अपरदन

(6) भू-आकृतिक अवस्था की संकल्पना :-

↳ डेविस के अनुसार एक स्थलरूप निम्न अवस्थाओं से गुजरता है।
(1) युवावस्था (2) प्रौढ़ावस्था (3) वृद्धावस्था या जीर्णावस्था

↳ नदी पर्वतीय भाग में युवावस्था में होती है और गहरे कटाव करती है जैसे: V आकार की घाटी, जलप्रपात, कैनियन, गार्ज
↳ निचे मैदानों में प्रौढ़ावस्था में होती है। और पार्श्व कटाव करती है। - बाढ़ का मैदान, गोखुर झील
↳ सागर के समीप जीर्णावस्था में केवल निक्षेप करती है और डेल्टा का निर्माण करती है।

(7) अपरदन चक्र की संकल्पना

↳ ये सिद्धान्त डेविस ने दिया।

(8) क्षेत्रीय भिन्नताओं में संक्रमणीय परिवर्तन :-

↳ दो प्रदेशों के बीच संक्रमण पेटी पायी जाती है।

(9) जलवायु परिवर्तन की संकल्पना :-

↳ जलवायु दीर्घकालीन मौसमी घटनाओं के औसत तथा उन दशाओं में पायी जाने वाली भिन्नताओं को प्रकट करती है। ये समयावधि (30-50 वर्ष) की होती है।

↳ शीतल अवधि को - हिमयुग
↳ दो शीतल अवधि के बीच गर्म अवधि को - अंतर्हिम युग

मानव भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ :-

(1) अंतर्सम्बंध की संकल्पना :-

↳ इसे पार्थिव एकता की संकल्पना भी कहा जाता है। पार्थिव एकता सिद्धान्त फेडरिक रेटजेल ने दिया।

समर्थक :- ब्लाश, ब्रूश, डिमांजियां

[2] कालिक परिवर्तन की संकल्पना :-

↳ इसे क्रियाशीलता के नाम से भी जाना जाता है। इसके अनुसार कोई भी तत्व या वस्तु स्थिर नहीं है।

" प्रकृति में प्रत्येक जीव / वस्तु की उत्पति होती है विकास होता है और विनाश होता है " इसे जीवन चक्र कहते हैं।

[3] सांस्कृतिक भूदृश्य की संकल्पनाऐं :-

(1) प्राकृतिक भूदृश्य (2) सांस्कृतिक भूदृश्य

भूदृश्य की व्याख्या कार्ल०सावर ने की।

जर्मन भाषा में लैण्डशाफ्ट

[4] नियतिवाद की संकल्पना :-

↳ जर्मन विचारधारा है।

↳ मनुष्य पर्यावरण की विशिष्ट देन है समस्त मानवीय क्रियाएँ पर्यावरण द्वारा नियंत्रित होती हैं।

↳ मानव प्रकृति का दास है - नियतिवाद विचारधारा

↳ समर्थक - रेटजेल

सेम्पुल हटिंग्टन ने भी समर्थन दिया।

↳ इस विचार धारा का विकास 19वीं शताब्दी तथा आरम्भिक 20वीं शताब्दी में जर्मन भूगोलवेताओं द्वारा हुआ।

↳ इसे पर्यावरण या पर्यावरण नियतिवाद के नाम से भी जाना जाता है।

[5] सम्भववाद की संकल्पनाएँ :-

↳ फ्रांसिस विचारधारा है।

↳ ये विचारधारा मानवीय प्रयत्नों पर अधिक बल देती है

↳ सम्भववाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम लुसियन फेब्रे ने 1922 में किया हालांकि इसका प्रतिपादन पहले ब्लाश द्वारा किया जा चुका था यह विचार धारा 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आयी

- ब्लाश :- मनुष्य स्वंय समस्या व हल दोनों है और प्रकृति उसकी उपदेशिका मात्र है।
- ब्लाश :- मनुष्य के लिए प्रकृति सलाहकार से ज्यादा कुछ नहीं है।
- समर्थक :- ब्रूश, डिमाजिया

↳ सम्भववाद के समर्थक अमेरिकी भूगोलवेदों में ईसा बोमेन प्रमुख है।

[6] नवनियतिवाद की संकल्पना :-

↳ यह नियतिवाद या पर्यावरणवाद की संशोधित विचारधारा है जो व्यवहारिक जगत के सर्वाधिक निकट है। वैज्ञानिक दृष्टी कोण पर आधारित होने के कारण इसे वैज्ञानिक नियतिवाद भी कहते है।

- टेलर - नव नियतीवाद का प्रतिपादक

टेलर ने इसे वैज्ञानिक नियतिवाद व रूको और जाओं कहा टेलर "प्रकृति चौराहे पर खड़ी ट्रैफिक पुलिस के समान है। जो यात्रियो को चौराहे पर नियंत्रित करती है किन्तु उनके गंतव्य को नहीं बदलती है।

- समर्थक :- कार्लसावर, हरबर्टसन

[7] व्यवहार परक भूगोल की संकल्पना :-

↳ यह एक नवीन संकल्पना है जिसका विकास 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में प्रत्यक्षवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ

↳ इसका सूत्रपात विलियम किर्क ने 1963 में प्रकाशित एक लेख द्वारा किया था।
→ भूगोल में व्यवहार परख चिन्तन को व्यापकता प्रदान करने में जुलियन बोल्वर्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
↳ व्यवहार परख भूगोल के विकास में प्रेड का भी महत्व-पूर्ण योगदान रहा।

[7] क्रांति परख भूगोल की संकल्पना :-

↳ 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में प्रत्यक्षवाद तथा मूल्य निरपेक्ष अवस्थितिक विश्लेषण की आलोचना के रूप मे एक नवीन विचारधारा का जन्म हुआ। इसे क्रांति परख व मार्क्सवादी भूगोल के नाम से जाना जाता है। मार्क्सवादी विचारधारा का आरम्भ सर्वप्रथम अमेरिका भूगोल वेता विलियम बुगी ने 1962 में किया 1969 में इस विचारधारा की पोषक एक पत्रिका एण्टीपोड का प्रकाशन आरम्भ किया डेविस हार्वे ने अपने लेखों से मार्क्सवादी विचारधारा को मजबूत किया।

[8] मानववादी भूगोल की संकल्पना :-

↳ 1976 (तुआन) ने मानववादी शब्द का प्रयोग किया मानववाद का सर्वप्रथम आरम्भ 20 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ब्लाश के नेतृत्व में फ्रांसिस विद्वानों ने किया।
↳ ब्लाश द्वारा प्रतिपादित विशिष्ट जीवन पद्धति तथा सम्भववाद मानववादी उपागम के ही रूप है।

[9] कल्याण परख भूगोल की संकल्पना :-

↳ इसका आरम्भ – 1970
↳ इसके प्रचार-प्रसार में डेविस स्मिथ व पॉल नोक्स का

↳ डेविस स्मिथ Book - Human Geography - A Welfare Approach मानव भूगोल (एक कल्याण परख उपागम)

↳ यह सकल्पना सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय पर आधारित है।

[1] आर्थिक भूगोल की संकल्पना :-

- प्राथमिक क्रिया :- संग्रहण, आखेट, पशुचारण, पशुपालन, कृषि वनोद्योग (लकड़ी काटना), उत्खनन।
- द्वितीय क्रिया :- विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य (गृह निर्माण) सड़क निर्माण।
- तृतीय क्रिया :- परिवहन, संचार, व्यापार, वाणिज्य, शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, प्रतिरक्षा, न्याय मनोरंजन
- चतुर्थ क्रिया :- विज्ञान, कला, साहित्य, प्रौद्योगिकी, शोध व उच्च सेवा।

[2] संपोषण विकास की संकल्पना :-

↳ यह नवीन संकल्पना है जो 1980 के दशक में आयी।

↳ पर्यावरण और विकास विषय पर 1987 में ब्रेन्टलेण्ड कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें प्रथम बार संपोषणीय विकास या सतत् विकास की व्याख्या की गई।

भूगोल का विकास :-

↳ प्राचीन पौराणिक ग्रन्थों में भारत में भूगोल के विकास के सन्दर्भ में कई तथ्य मिलते है। जिनमें पृथ्वी के विभिन्न पर्वतों - नदियों, हवाओं आदि के सम्बंध में वर्णन किए गए थे।

↳ लेकिन भूगोल के विकास के सन्दर्भ में आज से लगभग 2500 - 3000 हजार वर्ष पूर्व या 900 ईसा पूर्व से दूसरी

शताब्दी तक यूनान व रोमन साम्राज्य में भौगोलिक अध्ययन के वर्णन मिलते हैं।

↳ दूसरी शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी तक भूगोल सहित सभी विषयों के क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हो पाया अतः इस काल को अन्ध युग (Dark age) के नाम से जाना जाता है।

↳ अन्ध युग में धर्म गुरुओं का बोल-बाला था जिसके कारण भौगोलिक अध्ययन को महत्व नहीं मिला।

↳ साथ ही इस काल में अरब साम्राज्य के विस्तार के कारण भूगोल के क्षेत्र में नवीन खोजे नहीं हो पाई।

↳ लेकिन इस दौरान पुराने ग्रन्थों को संरक्षित रखने व उनका अनुवाद करने एवं आक्रमण के समय विभिन्न मार्गों से होते हुए मानचित्र निर्माण के कुछ कार्य किए थे।

↳ 14वी शताब्दी के बाद पुनर्जागरण काल आया जिसे खोज व अन्वेषण का काल भी कहा जाता है।

↳ इस काल में यूरोप वासियों द्वारा लम्बी यात्राएँ कर नए देशों व महाद्वीपों की खोज, समुद्री व समुद्री भागों की खोज आदि उल्लेखनीय कार्य किए गए।

↳ इन यात्रियों में वास्को डि गामा, कोलम्बस, मेगलन आदि मुख्य थे।

↳ 17वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक जर्मनी में भूगोल के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है

↳ यहाँ वारेनियस, काण्ट, हम्बोल्ट, रिटर, रैटजेल आदि भूगोल वेत्ताओं का योगदान मुख्य है।

↳ इन्होंने भूगोल की प्रकृति निश्चित करने तथा इसके अध्ययन

व द्वैतवाद की शुरुआत एवम् मानव भूगोल का विकास आदि महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

↳ 17 वीं से 19 वीं शताब्दी तक जर्मनी में भूगोल के अत्यधिक विकास के कारण इसे भूगोल के इतिहास में द्वितीय शास्त्रीय काल या आधुनिक शास्त्रीय काल के नाम से जाना जाता है

↳ इस काल के दौरान जर्मनी में मानव पर्यावरण सम्बंधो के क्षेत्र में निश्चयवाद, पर्यावरण वाद की अवधारणा प्रचलन में भी।

↳ आगे चलकर 20 वी शताब्दी में फ्रांस में भूगोल का विकास हुआ। जहाँ निश्चयवाद के विरोध स्वरूप एक नई अवधारणा सम्भववाद का विकास हुआ।

↳ 19, 20 वी शताब्दी में जर्मनी व फ्रांस के अतिरिक्त ब्रिटेन U.S.A, रूस व चीन भारत के कुछ भूगोलवेताओं का योगदान भी सराहनीय रहा है।

यूनानी भूगोल वेताओं का भूगोल के विकास में योगदान:-

↳ यूनानी भूगोल वेताओं का काल ईसा पूर्व 9 वी शताब्दी से लेकर पहली-दूसरी शताब्दी तक रहा है।

↳ इस काल में यूनानी दार्शनिक व विद्वानों ने प्रकृति, पृथ्वी ईश्वर, सृष्टि निर्माण एवम पृथ्वी के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों का वर्णन किया है।

↳ भूगोल के क्षेत्र में इन्होने पृथ्वी की ब्रह्माण्ड में स्थिति आकृति, आकार, विस्तार, इसके गणितीय माप, सूर्य व चंद्रमा से दूरी, खगोलिकी, समुद्र, ज्वार-भाटे, सूर्य ग्रहण, नदियों, पर्वतों, महाद्वीपो, देशों, विभिन्न जातियों उनके कार्यो का अध्ययन किया है।

↳ इस हेतु यूनान के कई विद्वानों ने भ्रमण व अनुभव के आधार पर, तर्क के आधार पर, आगमन-निगमन तुलनात्मक एवं मानचित्रिय विधियों के आधार पर अध्ययन किया है।

प्रमुख यूनानी भूगोल वेत्ता :-

(i) होमर – 900 ईसा पूर्व
(ii) थेल्स – 625 ईसा पूर्व से 548 ई.पू.
(iii) एनेक्सीमेण्डर – 610 ई.पू – 548 ई.पू.
(iv) पाइथोगोरस – लगभग 548 ई.पू.
(v) हेकेटियस – 500 ई.पू.
(vi) हेरोडोटस – 485 ई.पू – 425 ई.पू.
(vii) प्लेटो, अरस्तु थियोफ्रेस्टस :- 384 ई.पू. 324 ई.पू.
(viii) इरेटोस्थनीज – 276 ई.पू. – 196 ई.पू.
(ix) हिपार्कस – 150 ई.पू.
(x) पोसिडोनियस – 135 ई.पू. – 50 ई. पूर्व

होमर :-

↳ 10वी शताब्दी (ई.पूर्व) के आस-पास होमर स्कूल की स्थापना हुई।
↳ होमर स्कूल के विद्वान पृथ्वी को चपटी व वृत्ताकार मानते हैं और पृथ्वी को विशाल सरिता से घिरी हुई मानते हैं।
↳ होमर ने आकाश को ठोस अर्द्धगोल खोल माना जो एटलस पर्वत पर टिका हुआ है।
↳ होमर का मानना था पृथ्वी के चारों ओर समुद्र है और सूर्य प्रतिदिन सागर से निकलता है व इसी में डूब जाता है।
↳ होमर ट्रायसेसम्राज्य के पतन के बाद वापस लौटते समय समुद्री तूफानों का सामना किया तथा वहाँ चलने वाली हवाओं की प्रकृति के बारे में बताया।

↳ होमर ने अपने ग्रन्थ में 4 हवाओं का वर्णन किया जो चारों दिशाओं से चलती है।

(1) बोरोस :- उत्तर की ओर चलने वाली ठण्डी हवा।

(2) नोटस :- दक्षिण की ओर से चलने वाली गर्म व तूफानी हवा

(3) यूइस :- पूर्व की ओर से चलने वाली उष्ण व सरल हवा

(4) जैफरसन :- पश्चिम की ओर से चलने वाली चिपचिपी (आर्द्र) व तूफानी हवा।

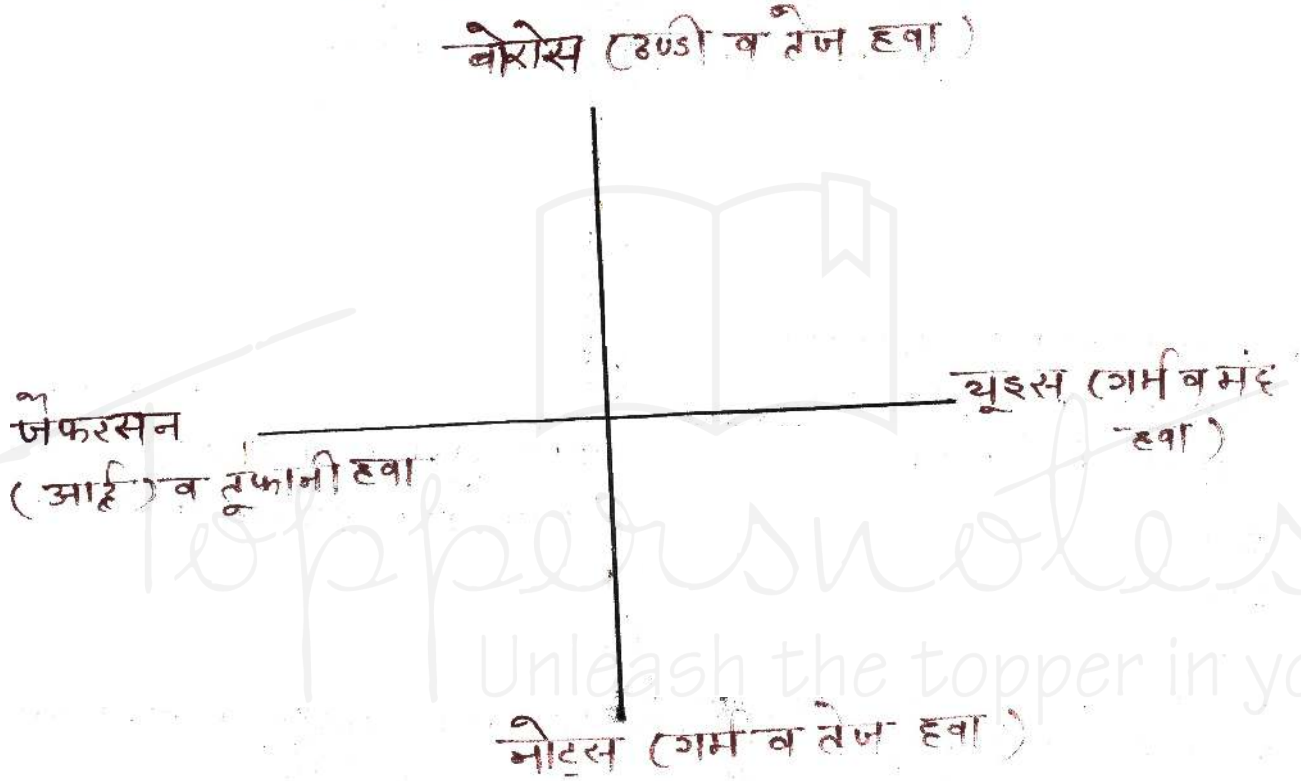

होमर के ग्रन्थ :- (1) इलियड (2) ओडिसी

↳ होमर ओडिसी महाकाव्य में तत्कालीन यूनानी विद्वानों को ज्ञात विश्व की परिधि पर स्थित विभिन्न स्थानों व प्रदेशों का सजीव चित्रण मिलता है। इस महाकाव्य का नायक ओडीसस है।

↳ इन ग्रन्थों में होमर ने पृथ्वी, आकाश व हवाओं का वर्णन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

किया।

• थेल्स :-

↳ थेल्स को यूनान का पहला चिंतक व दार्शनिक कहा जाता है
↳ थेल्स 6वी शताब्दी ईसा पूर्व मिलेटस नगर का निवासी था

मिलेटस :- प्राचीन यूनान साम्राज्य का नगर था जो वर्तमान में तुर्की की मियाण्डर नदी के तट पर स्थित है।

↳ थेल्स आयोनियन सागर के तटवर्ती क्षेत्र का पहला दार्शनिक था इस कारण इसे आयोनियन दर्शन का पिता कहा जाता है। थेल्स ने आयोनियन दर्शन की स्थापना की
↳ थेल्स पृथ्वी को पानी पर तैरती हुई तश्तरी मानते है तथा पृथ्वी को ब्रह्माण्ड के केन्द्र में बताया।

↳ थेल्स एक गणितज्ञ, व्यापारी व दार्शनिक थे इस कारण गणित की कई प्रमयों की रचना की। थेल्स ने अपनी यात्रा के दौरान कुछ लोगों को भूमि माप करते देखा तो इनकी रूचि भी इस क्षेत्र में विकसित हो गयी, भौगोलिक अध्ययन में माप एवं गणित के तथ्यो का प्रयोग करने से इन्हें गणितीय भूगोल का संस्थापक कहा जाता है।

↳ थेल्स ने पृथ्वी को मापने व पृथ्वी तल पर स्थानो को अंकित करने का प्रयास किया।

↳ थेल्स ने सूर्य व चन्द्रमा की स्थितियाँ, चन्द्रमा के घटने-बढने एवं इसकी गतियों के संदर्भ में गणनाएँ करते हुए 28 May 585 BC को सूर्यग्रहण होने की भविष्य वाणी की जो बाद में सही साबित हुई इस कारण थेल्स ब्रह्माण्ड विज्ञानी भी कहा जाता है।